धर्म का सबसे बड़ा साधन स्वस्थ शरीर है

अकबर का गमन

आखिरकार विदेश राज्य मंत्री एमजे अकबर को अपना पद छोड़ना ही पड़ा। उन पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाली महिलाओं की संख्या जिस तेजी से बढ़ रही थी उसे देखते हुए उनके समक्ष इसके अलावा और कोई चारा नहीं रह गया था कि वह त्यागपत्र दे दें। उचित होता कि वह विदेश यात्रा से लौटते ही त्यागपत्र देने का फैसला करते, क्योंकि उस समय तक कई महिलाएं उन पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगा चुकी थीं। इनमें कई गंभीर किस्म के और उन्हें शर्मसार करने वाले थे। बावजूद इसके विदेश यात्रा से लौटने पर पहले तो उन्होंने अपने पर लगे आरोप खारिज किए और फिर खुद को कठघरे में खड़े करने वाली महिलाओं पर मानहानि का मुकदमा करने की घोषणा की। वह एक महिला के खिलाफ अदालत पहुंच भी गए। कायदे से उन्हें अदालत जाने की घोषणा करने के साथ ही मंत्री पद छोड़ देना चाहिए था। उन्होंने ऐसा तब किया जब उन्हें कठघरे में खड़े करने वाली महिलाओं की संख्या और बढ़ गई। इनमें से अधिकतर उनके तहत काम करने वाली पत्रकार थीं। एक क्षण के लिए यह माना जा सकता है कि एक-दो महिलाएं किसी कथित एजेंडे के तहत उनके खिलाफ खड़ी हो गई हों, लेकिन इस पर यकीन करना कठिन है कि एक के बाद एक करीब 20 महिलाओं ने उन पर मिथ्या आरोप लगाए। लोकतंत्र में लोक भावना का अपना विशिष्ट महत्व होता है। उच्च पदों पर बैठे लोगों को न केवल लोक भावना की परवाह करनी चाहिए, बल्कि उदाहरण बनने वाले आचरण का परिचय भी देना चाहिए। एमजे अकबर ऐसा करने में चूक गए। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि सरकार और पार्टी से मिले संकेतों के बाद ही उन्होंने इस्तीफा देने का फैसला किया होगा, लेकिन ऐसे संकेत तभी दे दिए जाते तो और अच्छा होता जब वह पद न छोड़ने की बात कर रहे थे।

यह स्वाभाविक है कि एमजे अकबर के त्यागपत्र को मी टू अभियान की जीत के तौर पर देखा जाए, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि उन पर लगे आरोपों को प्रमाणित करना एक कठिन काम है। चूंकि एमजे अकबर केंद्र सरकार में मंत्री थे इसलिए उन पर इस्तीफे का दबाव था, लेकिन मी टू अभियान के तहत कठघरे में खड़े अन्य कई लोग किसी सार्वजनिक पद पर नहीं हैं और इसीलिए उनके खिलाफ कोई कार्रवाई होना भी मुश्किल है। यह मुश्किल इसलिए और है, क्योंकि यौन उत्पीड़न की बरसों पुरानी घटना के सुबूत जुटाना आसान काम नहीं। स्पष्ट है कि मी टू अभियान की अपनी एक सीमा है। एक तो कोई आम महिला किसी सामान्य-अचर्चित शख्स पर यौन शोषण के आरोप लगाए तो उसका मामला शायद ही सुर्खियां बने और दूसरे, ऐसा कोई सक्षम तंत्र नहीं दिखता जिससे बरसों पुराने मामले को अदालत के समक्ष सही साबित किया जा सके। ऐसे में एक ओर जहां यह जरूरी है कि महिलाएं यौन शोषण के हालात से दो-चार होते ही उसके खिलाफ आवाज उठाएं वहीं दूसरी ओर यह भी कि समाज एक ऐसा माहौल निर्मित करना अपनी जिम्मेदारी समझे जिसमें कोई किसी महिला के मान-सम्मान से खेलने की हिम्मत न जुटा सके।

सार्थक नाम परिवर्तन

इलाहाबाद का नाम बदलकर प्रयागराज किए जाने पर कुछ लोग भले ही नाक-भौं सिकोड़ रहे हैं, पर ऐसे अपवाद छोड़कर अधिसंख्य लोग इस पर सहमत और प्रसन्न दिख रहे हैं। जाहिर है कि सरकार ने इस फैसले के जरिये व्यापक जनभावना का सम्मान किया है। वास्तव में यह नामकरण नया नहीं है। 444 साल पहले अकबर ने प्रयागराज का नाम बदलकर इलाहाबाद कर दिया था। तब से बड़ा कालखंड गुजर गया। देश आजाद हुए भी 70 साल गुजर गए, पर किसी सरकार ने संगमनगरी को उसका गौरव वापस दिलाने का साहस नहीं जुटाया। इतिहास इस घटना के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सराहना करेगा कि उन्होंने 444 साल पहले हुई चूक को सुधारा। अफसोस है कि राजनीतिक और अन्य कारणों से कुछ लोग इस फैसले की भी आलोचना कर रहे हैं। यह सामाजिक वर्गों के तुष्टीकरण की इंतिहा है जिसके चलते देश के गौरव-चिह्न पहले ही खासे आहत हो चुके हैं।

अफसोस है कि राजनीतिक और अन्य कारणों से कुछ लोग इस फैसले की भी आलोचना कर रहे हैं

दो-ढाई दशक में प्रदेश की कई सरकारों ने वोटबैंक पॉलिटिक्स के चक्कर में कई जिलों, तहसीलों और योजनाओं के नाम बदले। सरकारें बहुमत के आधार पर जनभावनाओं की अनदेखी करके नाम उलटती-पलटती रहीं। इलाहाबाद का नाम बदलकर प्रयागराज करना कतई अलग तरह की घटना है। इसमें किसी तरह का राजनीतिक लाभ लेने के बजाय संगमनगरी का गौरव वापस लाने का भाव प्रबल दिखता है। यह सुखद संयोग है कि प्रयागराज में कुंभ शुरू होने से ठीक पहले यह बदलाव हुआ। मुगलों और अंग्रेजों ने देश की सभ्यता, शिक्षा प्रणाली, विरासत और जीवनशैली पर प्रहार करते समय नामकरण को भी ऐसे प्रयासों का जरिया बनाया।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या आपको लगता है कि महंगाई में आई तेजी अस्थाई है?

आज का सवाल

क्या इलाहाबाद का नाम बदलकर फिर से प्रयागराज करना सही है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, **N**-नहीं, **C**-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।
सभी आंकड़े प्रतिशत में।

जीत के मंत्र से अनजान कांग्रेस

प्रदीप सिंह

राहुल गांधी विधानसभा चुनावों में जिस तरह घूम-घूम कर प्रधानमंत्री को गाली दे रहे हैं उससे लगता है कि वह इस मुगालते में हैं कि यही जीत का मंत्र है

कांग्रेस सचमुच संकट में लगती है। बात सिर्फ चुनाव हारने-जीतने की नहीं है। सवाल दशा-दिशा और उसकी ओर से उठाए जा रहे मुद्दों का है। बीते कुछ समय में देश की दोनों बड़ी पार्टियों कांग्रेस और भाजपा में भारी बदलाव आया है। राहुल गांधी की कांग्रेस आजादी के आंदोलन की विरासत वाली कांग्रेस तो छोड़िए, इंदिरा गांधी वाली कांग्रेस भी नहीं रह गई है। यह सोनिया गांधी की कांग्रेस है जिसे राहुल गांधी अपनी कांग्रेस बनाना चाहते हैं। नतीजा यह हुआ है कि वह उसे अपनी कांग्रेस तो अभी तक बना नहीं पाए और पार्टी सोनिया गांधी की कांग्रेस रह नहीं गई। सोनिया गांधी ने कांग्रेस को एनजीओ (गैर सरकारी संगठन) बना दिया था। दस साल तक पार्टी और सरकार एनएसी यानी राष्ट्रीय सलाहकार परिषद ने चलाया। परिवार के प्रति वफादारी पहले भी आवश्यक शर्त थी। अब वफादारी एकमात्र शर्त हो गई है। देश के पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव की तारीखें घोषित हो गई हैं। इनमें तीन मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के नतीजे कांग्रेस और राहुल गांधी, दोनों का आगे का राजनीतिक रास्ता तय करेंगे। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा पंद्रह साल की एंटी इनकंबेंसी का सामना कर रही है। वहीं राजस्थान में पांच साल की सरकार और अलोकप्रिय मुख्यमंत्री का। यह परिस्थिति किसी भी विपक्षी दल के लिए सत्ता थाली में परोसकर मिलने जैसी है, परंतु ऐसा लग नहीं रहा है। पहले मध्य प्रदेश की बात करते हैं।

मध्य प्रदेश में कांग्रेस के प्रमुख रूप से तीन नेता हैं। नौ बार सांसद रहे कमलनाथ प्रदेश अध्यक्ष हैं। चुनाव की बागडोर उनके हाथ में दी गई है, लेकिन वह मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार घोषित नहीं किए गए हैं। उनकी डोर पीछे से ज्योतिरादित्य सिंधिया खींच रहे हैं, जो मुख्यमंत्री पद के लिए राहुल गांधी की एकमात्र पसंद हैं, लेकिन ठहरिए। उन्हें भी पार्टी ने मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित नहीं किया है। ये दोनों नेता लोकसभा के सदस्य हैं। वे विधानसभा का चुनाव लड़ेंगे या नहीं, यह अभी तक साफ नहीं है। तीसरे नेता हैं दिग्विजय सिंह। वह दस साल तक प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं। कहावत है कि मरा हाथी भी सवा लाख का होता है। सो दिग्विजय सिंह मध्य प्रदेश में अकेले ऐसे नेता हैं जिनका कम या ज्यादा, पूरे प्रदेश में जनाधार है। वह कभी राहुल गांधी के राजनीति गुरु माने जाते थे। अब राहुल गांधी उन्हें फूटी आंख नहीं देखना चाहते। चुनाव प्रचार शुरू हो चुका है और दिग्विजय सिंह पार्टी हाईकमान पर तंज कस रहे हैं। वह कह रहे हैं कि कहीं प्रचार के लिए या भाषण देने नहीं जाएंगे, क्योंकि उनके जाने से कांग्रेस के वोट कटते हैं। तो राज्य में पार्टी का सबसे मजबूत नेता घर बैठ गया है। जो पार्टी व्यापमं जैसे मुद्दे पर शिवराज सिंह चौहान की सरकार को नहीं घेर पाई उसकी मुद्दों को उठाने और उन्हें भुनाने की क्षमता पर संदेह होना स्वाभाविक है। इस मुद्दे पर कांग्रेस की हालत 'रोजे बख्शवाने गए थे और नमाज गले पड़ गई' जैसी है। अब झूठे तथ्य देने के आरोप में कांग्रेस के ही नेता कठघरे में खड़े हैं।

अवधेश राजपूत

नए-नए अध्यक्ष बने कमलनाथ ने फर्जी वोटर लिस्ट का मुद्दा जोरशोर से उठाया, लेकिन सुप्रीम कोर्ट में मुंह की खानी पड़ी। मध्य प्रदेश हो या राजस्थान अथवा छत्तीसगढ़, राहुल गांधी के भाषण सुनें तो आपको लगेगा कि विधानसभा का नहीं लोकसभा का चुनाव हो रहा है। भाजपा की तीन सरकारें मतदाता की अदालत में अपना रिपोर्ट कार्ड लेकर खड़ी हैं, लेकिन राहुल गांधी इन राज्यों में प्रधानमंत्री का रिपोर्ट कार्ड मांग रहे हैं। क्या कोई बता सकता है कि आखिर वह लोकसभा चुनाव में किसका रिपोर्ट कार्ड मांगेंगे? मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की छवि पर कांग्रेस चोट नहीं कर पाई है, परंतु शिवराज के मंत्रियों और विधायकों के खिलाफ भारी नाराजगी है।

राजस्थान का मामला और दिलचस्प है। कभी सोनिया गांधी और राहुल गांधी की पसंद रहे सीपी जोशी और मोहन प्रकाश काले पानी की सजा भोग रहे हैं। मैदान में अशोक गहलोत और सचिन पायलट हैं। अशोक गहलोत राजस्थान में कांग्रेस के सबसे लोकप्रिय नेता हैं। वह दस साल मुख्यमंत्री रह चुके हैं। एक समय राहुल गांधी उन्हें किनारे लगाना चाहते थे, लेकिन सोनिया गांधी के दखल से बच गए। इसके बाद गुजरात और कर्नाटक के प्रभारी के रूप में उन्होंने राहुल गांधी को प्रभावित किया। 1971 में पूर्वी बंगाल की शरणार्थी समस्या के समय शरणार्थी शिविरों में उनके काम को देखकर इंदिरा गांधी ने उनकी संगठन क्षमता को पहचाना था। इस सबके बावजूद मुख्यमंत्री पद के लिए राहुल गांधी की पसंद सचिन पायलट हैं। अगर कांग्रेस अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री के रूप में पेश नहीं करती है तो राजस्थान में सत्ता का आसान रास्ता कठिनाई में भी बदल सकता है। अभी तक इस बात के कोई संकेत नहीं हैं कि पार्टी मुख्यमंत्री पद के लिए किसी का नाम घोषित करेगी।

छत्तीसगढ़ एक ऐसा राज्य है जिसमें पंद्रह साल से सत्ता से बाहर होने के बावजूद कांग्रेस का ठोस जनाधार है। वह हर चुनाव में भाजपा का पसीना छुड़ाती है परंतु जीत नहीं पाती। प्रदेश में पार्टी के बहुत सारे छोटे, मझोले और बड़े नेता माओवादियों के हमले में मारे गए। अजीत जोगी बचे थे। उन्होंने अपनी जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ बना ली। अब मायावती की बहुजन समाज पार्टी से उनका तालमेल हो गया है। रमन सिंह चौथी बार मुख्यमंत्री बनने के लिए मैदान में हैं। आदिवासियों में चाउर वाले बाबा के रूप में जाने जाते हैं। राज्य में कांग्रेस का नेतृत्व बचा नहीं है। जो नेता बचे हैं वे सीडी कांड की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पहली बार प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री अजीत जोगी के बिना चुनाव लड़ेगी। इस आदिवासी बहुल राज्य में राहुल गांधी और उनकी पार्टी की क्या रणनीति है, बता पाना कठिन है।

नारे और लक्षित चुनाव प्रचार चुनाव नतीजों को प्रभावित करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। एक समय कांग्रेस को इसमें महारत हासिल थी। 1969 में कांग्रेस का विभाजन हुआ। इंदिरा गांधी ने समय से पहले लोकसभा भंग करके चुनाव कराया। नारा दिया, 'गरीबी हटाओ।' वह हर चुनावी रैली में कहती थीं, 'मैं कहती हूं गरीबी हटाओ और वे कहते हैं इंदिरा हटाओ।' बात लोगों के मन में घर कर गई। 1980 में कांग्रेस ने नारा दिया, 'जात पर न पांत पर इंदिरा जी की बात पर मुहर लगेगी हाथ पर।' यह नारा घर-घर पहुंच गया। आज राहुल गांधी की कांग्रेस के पास एक अच्छा नारा भी नहीं है। राहुल गांधी घूम-घूम कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गाली दे रहे हैं। लगता है कि वह इस मुगालते में हैं कि यही जीत का मंत्र है। चुनाव में नकारात्मक मुद्दे का फायदा मिलने की दो शर्तें होती हैं। पहली, एक ऐसा सकारात्मक मुद्दा जो विश्वसनीय लगे और जबान पर चढ़ जाए। दूसरा, मतदाता सत्तारूढ़ दल को उखाड़ फेंकने पर आमादा हों। 2014 में भाजपा ने ये दोनों शर्तें पूरी कीं। राहुल गांधी का प्रधानमंत्री को गाली देना 2009 में लालकृष्ण आडवाणी का मनमोहन सिंह को कमजोर प्रधानमंत्री बताने जैसा है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

जानलेवा साबित होता वायु प्रदूषण

पंकज चतुर्वेदी

हवा में पीएम ज्यादा होने का अर्थ है-आंखों में जलन, फेफड़े खराब होना, अस्थमा, कैंसर और दिल के रोग

देश की राजधानी दिल्ली और आसपास के लोग अभी भले ही स्मॉग के भय से भयभीत न हों, लेकिन जैसे-जैसे आसपास के राज्यों में पराली जलाने में तेजी आ रही है, दिल्लीवासियों की सांसें अटक रही हैं। यहां प्रदूषण का स्तर काफी बढ़ चुका है। देश की राजधानी के गैस चैंबर बनने में 43 प्रतिशत जिम्मेदारी धूल-मिट्टी और हवा में उड़ते मध्यम आकार के धूल कणों की ही है। यहां की हवा को खराब करने में गाड़ियों से निकलने वाले धुएं की 17 फीसद और पैटकॉन जैसे पेट्रो-ईंधन की 16 प्रतिशत भागीदारी है। इसके अलावा भी कई कारण हैं जैसे कूड़ा जलाना। दिल्ली सरकार आबोहवा को लेकर कितनी चिंतित है, इसकी बानगी है एनजीटी का वह हालिया आदेश जिसमें बढ़ते प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए नाकाम रहने पर दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड पर जुर्माना लगाया गया है। एक अनुमान है कि हर साल अकेले पंजाब-हरियाणा के खेतों में कुल तीन करोड़ 50 लाख टन पराली जलाई जाती है। एक टन पराली जलाने पर दो किलो सल्फर डाईऑक्साइड, तीन किलो ठोस कण, 60 किलो कार्बन मोनोऑक्साइड, 1460 किलो कार्बन डाईऑक्साइड और करीब 200 किलो राख निकलती हैं। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि जब कई करोड़ टन फसल अवशेष जलते हैं तो वायुमंडल की कितनी दुर्गति होती होगी। हानिकारक गैसों एवं सूक्ष्म कणों से परेशान दिल्ली वालों के फेफड़ों को कुछ महीने हरियाली से उपजे प्रदूषण से भी जूझना पड़ता है। विडंबना है कि परागण से सांस की बीमारी पर चर्चा कम ही होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार पराग कणों की ताकत उनके प्रोटीन और ग्लाइकॉल प्रोटीन में निहित होती है, जो मनुष्य के बलगम के साथ मिलकर अधिक जहरीले हो जाते हैं। ये प्रोटीन जैसे ही हमारे खून में मिलते हैं, एक तरह की एलर्जी को जन्म देते हैं। यह एलर्जी इंसान को गंभीर सांस की बीमारी की तरफ ले जाती है। चूंकि गर्मी में ओजोन परत और मध्यम आकार के धूल कणों का प्रकोप ज्यादा होता है इसलिए पराग कणों के शिकार लोगों के फेफड़े क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। लिहाजा ठंड शुरू होते ही दमा के मरीजों का दम फूलने लगता है।

यह तो सभी जानते हैं कि मिट्टी के कण लोगों को सांस लेने में बाधक बनते हैं। मानकों के अनुसार हवा में पार्टीकुलेट मैटर यानी पीएम की मात्रा 100 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर होनी चाहिए, लेकिन अभी ये खतरनाक पार्टिकल 240 के करीब पहुंच गए हैं। इसका एक बड़ा कारण विकास के नाम पर हो रहे वे अनियोजित निर्माण कार्य हैं, जिनसे असीमित धूल उड़ रही है। पीएम ज्यादा होने का अर्थ है कि आंखों में जलन, फेफड़े खराब होना,

अस्थमा, कैंसर और दिल के रोग।

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद यानी सीएसआइआर और केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान द्वारा हाल में दिल्ली की सड़कों पर किए गए एक सर्वे से पता चला है कि सड़कों पर लगातार जाम लगे होने और इस कारण बड़ी संख्या में वाहनों के रेंगते रहने से गाड़ियां डेढ़ गुना ज्यादा ईंधन पी रही हैं। जाहिर है उतना ही अधिक जहरीला धुआं यहां की हवा में शामिल हो रहा है।

बीते मानसून के दौरान ठीकठाक बरसात होने के बावजूद दिल्ली के लोग बारीक कणों से हलकान हैं तो इसका मूल कारण विकास की वे तमाम गतिविधियां हैं जो बगैर अनिवार्य सुरक्षा नियमों के संचालित हो रही हैं। इन दिनों राजधानी के परिवेश में इतना जहर घुल रहा है जितना दो साल में कुल मिलाकर नहीं होता। बीते 17 सालों में दिल्ली में हवा के सबसे बुरे हालात हैं। आज भी हर घंटे एक दिल्लीवासी वायु प्रदूषण का शिकार हो कर अपनी जान गंवा रहा है। गत पांच वर्षों के दौरान दिल्ली के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल एम्स में सांस के रोगियों की संख्या 300 गुणा बढ़ गई है। एक अंतरराष्ट्रीय शोध रिपोर्ट में यह आशंका जताई गई है कि अगर प्रदूषण स्तर को काबू में नहीं किया गया तो 2025 तक दिल्ली में हर साल करीब 32,000 लोग जहरीली हवा के शिकार होकर असामयिक मौत के मुंह में समा जाएंगे। सनद रहे कि आंकड़ों के मुताबिक वायु प्रदूषण के कारण दिल्ली में हर घंटे एक व्यक्ति की मौत होती है। यह भी जानना जरूरी है कि वायुमंडल में ओजोन का स्तर 100 एक्यूआइ यानी एयर क्वॉलिटी इंडेक्स होना चाहिए, लेकिन जाम से हलकान दिल्ली में यह आंकड़ा 190 ही रहता है। देश के अन्य शहरों में भी यह सामान्य स्तर से अधिक रहता है।

वाहनों के धुएं में बड़ी मात्रा में हाइड्रोकार्बन होते हैं और तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के पार होते ही यह हवा में मिलकर ओजोन का निर्माण करने लगते हैं। यह ओजोन इंसान के शरीर, दिल और दिमाग के लिए जानलेवा है। इस खतरे का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि वायु प्रदूषण करीब 25 फीसद फेफड़े के कैंसर की वजह है। इस खतरे पर काबू पा लेने से हर साल करीब 10 लाख लोगों की जिंदगियां बचाई जा सकेंगी। दिल्ली और देश के दूसरे शहरों में वायु प्रदूषण को और खतरनाक स्तर पर ले जाने वाले पैटकॉन पर रोक के लिए कोई ठोस कदम न उठाना भी हालात को खराब कर रहा है। जब पेट्रो पदार्थों को रिफाइनरी में परिशोधित किया जाता है तो सबसे अंतिम उत्पाद होता है-पैटकॉन। इसके दहन से कार्बन का सबसे ज्यादा उत्सर्जन होता है। चूंकि इसके दाम डीजल-पेट्रोल या पीएनजी से बहुत कम होते हैं लिहाजा अधिकांश बड़े कारखाने अपनी भट्ठियों में इसे ही इस्तेमाल करते हैं। अनुमान है कि जितना जहर लाखों वाहनों से हवा में मिलता है उससे दोगुना पैटकॉन इस्तेमाल करने वाले कारखाने उगल देते हैं। यह स्पष्ट हो चुका है कि बड़े शहरों में वायु प्रदूषण का बड़ा कारण बढ़ रहे वाहन और ट्रैफिक जाम है। दिल्ली जैसे शहरों में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए निर्माण स्थलों पर धूल नियंत्रण, सड़कों पर जाम लगने से रोकने के साथ-साथ पानी का छिड़काव भी जरूरी है। इसके अलावा ज्यादा से ज्यादा सार्वजनिक वाहनों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके लिए सबसे जरूरी पहलू है सार्वजनिक परिवहन ढांचे को दुरुस्त बनाना ताकि लोगों को अधिकतम सहूलियत मिल सके और वे स्वयं इसे अपनाने पर जोर दें। इस पर भी विचार किया जाना समय की मांग है कि सार्वजनिक स्थानों पर किस तरह के पेड़ लगाए जाएं?

(लेखक पर्यावरण मामलों के जानकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

प्रभु कृपा

हमारी जिंदगी में जब कुछ होता है तो हम सोचते हैं कि शायद हमारे करने से कुछ हो रहा है और यह भूल जाते हैं कि जो कुछ भी हो रहा है, वह प्रभु की दया और कृपा से हो रहा है। बहुत बार जब जिंदगी में कोई मुश्किल आती है तो इंसान घबरा जाता है और सोचता है कि लगता है प्रभु ने मुझे छोड़ दिया है, प्रभु मेरा खयाल नहीं रख रहे। महापुरुष हमें समझाते हैं कि चाहे दिन ऐसे हों जो हमें अच्छे लगें, चाहे दिन ऐसे हों जो हमें बुरे लगें, सभी दिन प्रभु की दया से ही हमारी जिंदगी में आते हैं। जिंदगी में ऊंच-नीच आनी ही है, क्योंकि हमारे अपने पुराने कर्मों के बारे में हमें कुछ मालूम नहीं है। बहुत बार जब कठिनाई के दिन हमारी जिंदगी में आते हैं तो उस समय हमें घबराना नहीं चाहिए। उसमें भी हमारी कुछ भलाई होती है जो हमारी समझ में नहीं आती है।

हमें जिंदगी ऐसे जीनी चाहिए जैसे प्रभु की इच्छा से ही सब कुछ चल रहा है, उन्हीं के इशारे पर सब कुछ होता है। अगर यह बात इंसान की समझ में आ जाए तो वह हर समय खुश रहेगा, हर समय शांत रहेगा, उसमें हलचल नहीं होगी और तभी वह असलियत को जान पाएगा। प्रभु में विश्वास होना सबसे ज्यादा जरूरी है। अगर विश्वास नहीं हो तो इंसान कुछ नहीं पा सकता।

हम सबके कर्म अलग-अलग हैं, हम सबकी जिंदगी अलग-अलग है। कुछ दिन ऐसे आएंगे जो सुख-चैन से भरे होंगे, कुछ दिन ऐसे आएंगे जो दुख-दर्द से भरे होंगे। जब हम दुख-दर्द से भरे हुए हों तो हमें घबराना नहीं चाहिए, हमें अपना ध्यान प्रभु की ओर रखना चाहिए। जिंदगी तो चलती रहती है, कहीं पर लेन-देन, कहीं पर नुकसान, कहीं पर फायदा, यह सब तो इंसान की जिंदगी में होता रहता है। यह सब बाहरी जीवन है। अगर अंदर से हमारा मिलाप प्रभु के साथ हो गया और हमारा संबंध प्रभु के साथ पक्का हो गया तो फिर बाहर की ऊंच-नीच हमें परेशान नहीं कर पाती। हम सबको उस अवस्था तक पहुंचना है, और वहां हम तब पहुंचेंगे जब हम ध्यान-अभ्यास में बैठेंगे। हम सब प्रभु को पा सकते हैं, क्योंकि हम उन्हीं के अंश हैं। प्रभु हमारे बहुत करीब हैं, हमारे भीतर हैं, हमारे अंग-संग हैं। हमें सिर्फ ध्यान उनकी ओर देना है। जब हम प्रभु की ओर ध्यान देंगे तो फिर बाहरी दुनिया की हलचल हमें परेशान नहीं कर पाएगी।

संत राजिंदर सिंह जी महाराज

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

जजों की पर्याप्त संख्या का सवाल

सुधारों के इंतजार में सुप्रीम कोर्ट शीर्षक के तहत लिखे अपने लेख में राजीव सचान ने सुप्रीम कोर्ट में सुधार लाने के प्रयास न होने पर चिंता जताई है। अगर लेखक यह भी जिक्र करते कि इसमें सुधार कैसे किया जाए या कौन इसमें सुधार करेगा? तो अच्छा होता। सुप्रीम कोर्ट निष्पक्ष और उचित फैसले लेता है। इस पर शक करना लोकतंत्र को कमजोर करना है, लेकिन कुछ समय पहले सुप्रीम कोर्ट के ही चार जजों ने उसकी कार्यप्रणाली को लेकर कुछ आरोप लगाए थे जिसे देखते हुए यह कहना उचित होगा कि जहां आग लगती है धुआं भी वहीं ही उठता है। दरअसल अदालतों में जजों की भारी कमी है। उसमें मामलों का अंबार लगा है। जजों की कमी आमजन के साथ सरासर नाइंसाफी है। देश में पढ़े-लिखे होनहार लोगों की कमी नहीं है। फिर सरकार जजों की संख्या क्यों नहीं बढ़ाती? क्यों न्यायाधीशों की नियुक्ति प्रणाली को आसान नहीं बनाया जाता? सरकार को जजों की संख्या बढ़ाने के लिए उचित रास्ता निकालना चाहिए। राजेश कुमार चौहान, जालंधर

नए रूप में डाकघर

आज के इस तकनीकी दौर में जहां बैंकों तथा अन्य व्यावसायिक संगठनों का विश्वास की कसौटी पर खरा उतरना बहुत मुश्किल है, वहीं डाक विभाग बहुत ही मजबूती, पेशेवर और विश्वसनीय तरीके से अपने कार्य को सुनियोजित ढंग से अंजाम दे रहा है। डाक घर की कार्यशैली को नित नए-नए उपकरणों तथा तकनीकी संसाधनों से सुसज्जित किया जा रहा है। आज डाकघर हर वह कार्य कर रहा है जो कभी एक बैंक करता था, अगर सच कहा जाए तो कई सेवाएं तो ऐसी हैं जो बैंक भी नहीं दे पा रहे हैं। आज आप देश के किसी भी कोने से अपने खाते में लेन-देन कर सकते हैं, वह भी बिना किसी शुल्क के। डाक घर के मूल कार्य भी बेहद मजबूत तरीके से संपन्न किया जा रहा है यानी जो पत्र आप के घर पहुंचने में ज्यादा समय लेता था तथा आपको यह ज्ञात नहीं हो पाता था कि आपका पत्र अभी कहां है, उसके लिए भी ट्रैकिंग सिस्टम आ गया है और आपका पत्र भी जल्द मिल जाता है। कुछ ही दिनों में यह भी संभव होने वाला है की पत्र आपके घर पहुंचने के पहले ही यह पता चल जायेगा कि आपका पत्र डाक घर से कौन सा डाकिया ला रहा है। लोगों ने 150 वर्षों से भी ज्यादा वर्षों तक डाकघर पर जो विश्वास दिखाया है वह और भी मजबूत हुआ है। kumardharam.34@gmail.com

कन्याओं को सम्मान की जरूरत

नवरात्र के बाद आखिरकार कंचका यानि कन्या पूजन आ ही गया। यह एक ऐसा त्योहार है, जहां हर एक इंसान अपने घर कन्या होने के सपने देखता है। उसके घर 9 कन्याएं कैसे आए, वह यह सोचता है। सोचने वाली बात तो यह है कि इस दिन वे इंसान भी बहुत श्रद्धा से कन्याओं को अपने घर बुलाते हैं, जिन्होंने लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही कोख में मार दिया होता है। वह लोग भी उस दिन कन्याओं के पैर छूते हैं, जिनकी गंदी निगाहें अक्सर उनके जिस्म पर आकर टिक जाती हैं। आज वह हर इंसान कन्या पूजन की चाह में एक-दूसरे के घर के दरवाजे पर दस्तक देता है। आखिर क्या जरूरत है हमारे समाज को ऐसे झूठे दिखावे की? क्या कन्या पूजन के लिए एक विशेष दिन होना जरूरी है? यह कैसा देश है जहां एक दिन कन्याओं को पूजा जाता है और बाकी दिन उनके अस्तित्व पर अंगुलियां उठाई जाती हैं? आज समाज की हर एक लड़की बड़ी असमंजस में होगी कि क्या वाकई उनकी पूजा होगी? क्या यह पावन दिन सच में लोगों का नजरिया हमारे लिए बदलेगा? हालांकि, समाज को जरूरत है कि वह हर दिन नवरात्र की तरह पावन कर दें। बेटियों को पूजने की नहीं इज्जत देने की जरूरत है। उनके आत्मसम्मान को बनाए रखने की जरूरत है। harshitajoshi107@gmail.com

हैशटैग मी टू पुरुषों के लिए भी हो

समाचार पत्रों से महाराष्ट्र में घटित एक बहुत ही कारुणिक खबर की जानकारी मिली। खबर थी कि एक 38 वर्षीय शादीशुदा और बाल-बच्चेदार पुरुष ने एक औरत की जबरदस्ती संबंध बनाने की जिद और जिद पूरी न होने की स्थिति में उस व्यक्ति को पुलिस केस कर फंसाने की धमकी देने के दबाव में आकर आत्महत्या कर ली। पिछले कुछ दिनों से पूरे देश में हैशटैग मी टू के जरिए कई पुरुषों द्वारा बीस-बीस साल पुराने शारीरिक शोषण से पीड़ित महिलाएं खुलकर सोशल साइट्स पर अपने केस के बारे में बता रही हैं। हर भारतीय का यह नैतिक कर्तव्य है कि ऐसे आरोपितों पर कानूनी कार्रवाई होने व आरोप सच साबित होने के बाद दंड देने का समर्थन करें। यह भी ध्यान रखना होगा कि कानून का काम समदर्शी और निष्पक्ष रहना है। nirmalkumarsharma3@gmail.com

बेकाबू होता प्रदूषण

दिल्ली के पर्यावरण की सुध लेने वाला कोई नहीं है, क्योंकि विश्व के 15 प्रदूषित शहरों में 14 शहर अपने देश में ही हैं और एक शहर चीन का है। यह आंकड़ा शर्मसार करने के लिए काफी है। दिल्ली में पीएम 2 स्तर लगभग 291 है, जो कि एक स्वस्थ इंसान की सांस, त्वचा और दूसरी गंभीर बीमारियों से ग्रसित करने के लिए काफी है। अमेरिका में यह स्तर 35 रहता है। व्यंग्यात्मक तौर पर प्रसिद्ध अमेरिकी गायक ब्रायन एडम ने भारत को मैजिकल इंडिया के नाम से नवाजा है। दिल्ली के पर्यावरण का यही हाल रहा तो दिल्ली में होने वाले अंतरराष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों व उनमें शिरकत करने वाले विदेश के शासनाध्यक्षों व अधिकारीगणों द्वारा कार्यक्रमों का बहिष्कार करना कोई अचरज वाली बात नहीं होगी। multistoreyed99@rediffmail.com

ट्वीट-ट्वीट

ठांय-ठांय वाले वीडियो पर देश भर में सिपाही का मजाक बनाया गया। किसी ने यह नहीं सोचा कि विपरीत परिस्थिति में पिस्टल जाम होने पर भी निर्भीकता से डटे रहना और हथियारों से लैस बदमाशों का सामना करना कितनी बहादुरी का काम था। यूपी पुलिस द्वारा उसे पुरस्कृत करने के फैसले का स्वागत है। वेदांक सिंह@VedankSingh

मी टू अभियान की प्रबल समर्थक होने के नाते मैं यह दोहराना चाहूंगी कि मैं इसके बावजूद उसके पक्ष में आवाज उठाती रहूंगी कि मेरे पिता पर परेशान करने वाले आरोप लगे हैं जिनका उन्होंने साफ तौर पर खंडन किया है। नंदिता दास@nanditadas

तो अब इलाहाबाद का नाम प्रयागराज? पुरानी आदत नई सरकार। कनॉट प्लेस को राजीव चौक किया गया, पर लोग अभी भी सीपी कहते हैं! काश नाम बदलने के पहले सरकारें शहरों की तस्वीर बदलतीं! नाम बदलना आसान है, शहर में जनता को बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य देना मुश्किल! सही कहा? राजदीप सरदेसाई@sardesairajdeep

अब आस्था के नाम पर महिलाओं को पीटा जाएगा! भीड़तंत्र के आगे सर्वोच्च न्यायालय, राज्य सरकार, केंद्रीय सरकार सब बेकार साबित हो रहे हैं। भाजपा सिर्फ आग में घी डाल रही है। जयंत चौधरी@jayantrld

जनपथ

पदवी तीरथराज की नाम इलाहाबाद,
किस 'महान' ने था किया आखिर ये आघात?
आखिर ये आघात पांच सदियों तक झेला,
अब प्रयाग के नाम समर्पित अगला मेला!
इसी तर्ज पर धाम 'अयोध्या' होय यशस्वी,
तब योगी की लोग सार्थक समझें पदवी।

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 29 अंक 93